जनसंख्या
(POPULATION)

यदि विश्व के मानव वितरण का अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि एशिया प्रारम्भ काल से ही मानव निवास का केन्द्र रहा है। अनेक मानवशास्त्रियों का मत है कि एशिया केवल मानव निवास का केन्द्र ही नहीं रहा वरन् मानव का जन्मस्थान भी रहा है। आज भी एशिया विश्व की बढ़ती हुई जनसंख्या का केन्द्र है। यह बात अपने आप स्पष्ट हो जाती है, जब हम जापान की जनसंख्या का अध्ययन करते हैं। शायद ही विश्व के किसी भी राष्ट्र के क्षेत्रफल को देखते हुए इतनी जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई हो जितनी कि जापान में हुई है। जापान की बढ़ती हुई जनसंख्या का प्रभाव जापान के धरातल के प्रत्येक स्वरूप पर पड़ा है। आज जापान की प्रत्येक इंच भूमि का मानव द्वारा प्रयोग किया जा रहा है। भूमि के अभाव और जनसंख्या के अत्यधिक दबाव के कारण जापान में वनों को काट दिया गया है, दलदलों को सुखा लिया गया

है, कृषि अयोग्य भूमि को हर सम्भव तरीकों से कृषि योग्य बनाया जा रहा है। जापान के प्रत्येक भौगोलिक रूप, प्राकृतिक सम्पत्ति सभी मानव के हाथों से स्पर्श कर ली गई है और उनका अधिक से अधिक शोषण किया जा रहा है।[1]

जनसंख्या में वृद्धि—जापान की जनसंख्या की अधिकता का अनुमान इस तत्व से जाना जा सकता है कि जापान के निवासी उस क्षेत्र में भी कृषि कार्य में लगे हुए हैं जहां आज भी ज्वालामुखी विस्फोट होते रहते हैं। जापान की जनसंख्या की वृद्धि में एक महत्वपूर्ण बात यह भी रही है कि इस देश की जनसंख्या युद्ध काल में भी बढ़ती रहती है। निम्न तालिका से जनसंख्या की वृद्धि स्पष्ट हो जाती है :

वर्ष	जनसंख्या (लाख में)	जनसंख्या का घनत्व (प्रति वर्ग किलोमीटर)
1900	424	104
1950	830	225
1960	934	242
1970	1039	280
1975	1115	298
1980	1170	314
1985	1210	318
1990	1236	328
1991	1240	330
1992	1244	332
1993	1247	334
2003	1272	336
2005	1277	343
2010	1280	351

जनसंख्या की वृद्धि के कारण—जापान में जनसंख्या की वृद्धि 1880 से प्रारम्भ हुई है और तभी से यह निरन्तर होती चली आ रही है। जापान की जनसंख्या की वृद्धि के निम्नलिखित कारण हैं :

(1) मानसूनी जलवायु के कारण जापान मानव निवास के लिए उत्तम स्थल है।

(2) सामुद्रिक स्थिति एवं एशिया के पूर्वी द्वार पर स्थित होने के कारण जापान मानव आकर्षण का केन्द्र रहा है।

(3) जापान के निवासियों का मुख्य भोजन चावल तथा मछली है। इस कारण से यहां की जन्म-दर अधिक है।

(4) गर्म जलवायु का मानव वृद्धि पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

(5) जापान एक औद्योगिक राष्ट्र है, जहां मजदूरों की आवश्यकता पड़ती है अतएव यहां घनी आबादी मिलती है।

(6) जापान की जनसंख्या वृद्धि में 1941 की सरकारी योजना रही है जिसके अनुसार सैनिकों तथा श्रमिकों की पूर्ति के लिए जनसंख्या वृद्धि की योजना कार्यान्वित की गई थी।

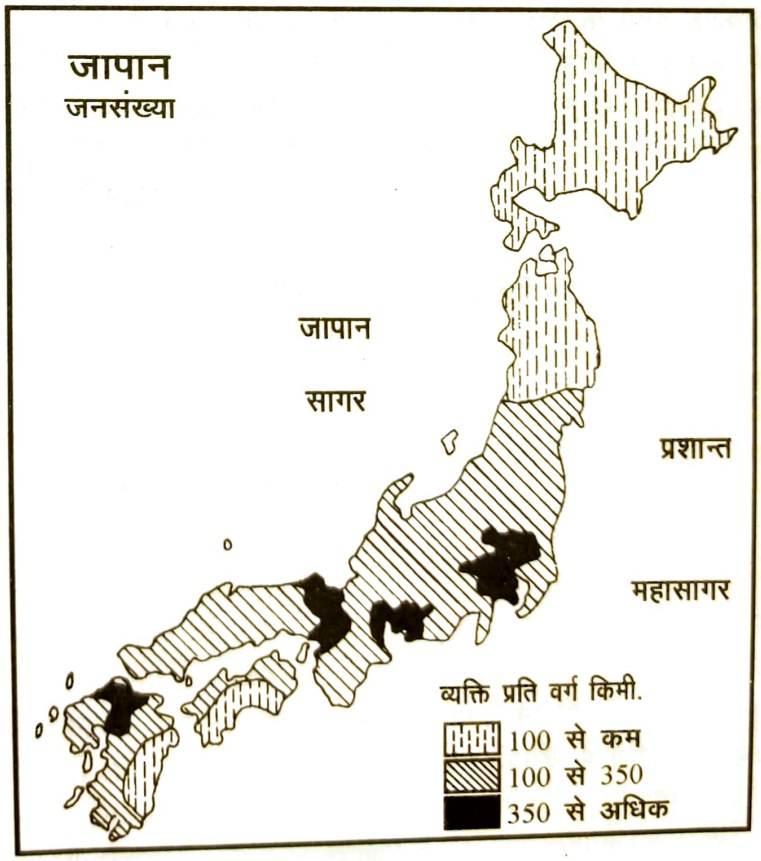

चित्र 17

वास्तव में, जापान की जनसंख्या की वृद्धि में प्राकृतिक कारणों के अलावा

1 "Japan is a country where the stones show human fingerprints, where the pressure of man on the earth has worn through to the iron rock." —Trewartha, *A Geography of Japan*, p. 121.

मानवीय कारण सबसे महत्वपूर्ण है। 1941 तक जापान पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया के अनेक राष्ट्रों के भाग पर साम्राज्य स्थापित कर चुका था। साम्राज्य वृद्धि एवं सैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जापान को सैनिक, शासक तथा मजदूरों की अत्यधिक आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति के लिए जापान सरकार ने 1941 में एक योजना बनाई जिसके अनुसार जापान की जनसंख्या में अत्याधिक वृद्धि करना था। योजना के अनुसार जापान की जनसंख्या की वृद्धि की दर को अन्य देशों की अपेक्षा सबसे अधिक बढ़ाना था। इन योजना की पूर्ति हेतु सभी सम्भव कार्य किए गए। बड़े परिवारों को पुरस्कार दिए गए, विवाह इच्छुक व्यक्तियों को धन दिया गया तथा अविवाहितों पर कर की वृद्धि की गई। योजना को पूरा करने के लिए काफी धन व्यय किया गया।

जापान में जनसंख्या की वृद्धि योजना के अनुसार हुई। जनसंख्या निरन्तर बढ़ती गई और वे सभी उद्देश्य जिसके लिए जनसंख्या बढ़ायी गई पूरे न हो सके। 1945 में जापान की पराजय के बाद परिस्थितियां बदल गईं और देश में जनसंख्या की वृद्धि एक समस्या बन गई। 1948 में ही जापान सरकार के आगे जनसंख्या एक जटिल समस्या का रूप धारण कर गई।[1]

जनसंख्या की वृद्धि रोकने के लिए अनेक उपाय तलाश किए जाने लगे, लेकिन जनसंख्या निरन्तर तीव्र गति से बढ़ती गई और जनसंख्या की वृद्धि सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्या का रूप ग्रहण कर गई। अन्त में, जापान सरकार को जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाने के लिए गर्भपात को कानूनी रूप देना पड़ा। जापान विश्व का पहला और एकमात्र देश है जहां ऐसा किया गया।[2] जापान में प्रति वर्ष लगभग 12 लाख कानूनी गर्भपात प्रमाण-पत्र यूजैनिक प्रोटेक्शन कानून (Eugenic Protection Law) के अन्तर्गत दिए जाते हैं।[3]

जनसंख्या घनत्व एवं वितरण—जापान एशिया महाद्वीप का सबसे अधिक विकसित राष्ट्र है। यहां वर्ष 2005 में जनसंख्या 1277 लाख तथा जनसंख्या घनत्व 343 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। जापान में जनसंख्या का वितरण प्रमुख रूप से धरातलीय विषमताओं द्वारा प्रभावित होता है। देश के मैदानी भागों पर देश की कुल जनसंख्या का 85% निवास करता है। जापान में छोटे-छोटे मैदान तो अनेक हैं किन्तु जापान में तटीय मैदानी भागों में जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

यहां जनसंख्या का सर्वाधिक जमाव औद्योगिक पेटी में मिलता है। यह औद्योगिक पेटी क्यूशू एवं शिकोकू द्वीपों के उत्तरी भागों में होती हुई होंशू द्वीप के पूर्वी तटीय भागों तक लगभग 1,000 किलोमीटर की लम्बाई में टोक्यो नगर तक है। इस पेटी में देश की लगभग 60% जनसंख्या निवास करती है। यहां जनसंख्या घनत्व 5,000 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी तक मिलता है। होंशू द्वीप के मध्यवर्ती पहाड़ी भागों की नदी घाटियों में भी जनसंख्या का सघन जमाव है। जापान के उत्तरी भागों में जनसंख्या कम पाई जाती है, क्योंकि यहां तापमान बहुत नीचा रहता है जो मानव के प्रतिकूल है। यहां जनसंख्या घनत्व 25 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से भी कम मिलता है।

ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या—जापान में नगरीकरण की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। नगरीकरण का प्रमुख प्रभाव औद्योगीकरण रहा है। 1999 में यहां की 67% जनसंख्या नगरों में तथा 23 प्रतिशत गांवों में रहती थी।